पंचम अध्याय

"मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यास में प्रतिबिंबित नारी-विमर्श"

पंचम अध्याय

"मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यास में प्रतिबिंबित नारी — विमर्श।"

❖ नारी विमर्श —

आज के आधुनिक युग में अनेक विचारों में से प्रगतिशील विचार के रूप में नारी—विमर्श हमारे सामने आता है। इसकी नींव नारी मुक्ति आंदोलन पर खडी है। सन १९२० में नारी मुक्ति आंदोलन की शुरूवात को उठाया गया था। इसमें नारी के समान अधिकार के मुद्दे को उठाया गया था। नौकरी, राजनीति, घेरलू नीति कार्यो तथ सांस्कृतिक प्रथा इनके अधिकारों के रूप में नारी मुक्ति सामने आयी। सन १९६० में इस आंदोलन का रूप उग्र हुआ था। नारी की समस्या को उस वक्त विविध स्तरों पर महत्व दिया गया था। इस आंदोलन ने पितृसत्ताक समाज के विरूद्ध आवाज उठाई। आगे १९८० में स्त्रीवादी विचारधारा पर उत्तर आधुनिकवादी विचार का प्रभाव हुआ।

बींसवी सदी में हुए पश्चिमी नारी—मुक्ति आंदोलन का प्रभाव हिंदी साहित्य और समाजपर हुआ। जब यह आंदोलन पश्चिम में खत्म हुआ तब स्त्रीवाद के रूप में हिंदी साहित्य में इसका प्रवेश हुआ। आज वहीं नारीवाद हिंदी साहित्य के उपन्यास, कहानी, कविता तथा नाटक में एक विमर्श का रूप लेकर लेखन का विषय हुआ।

नारी विमर्श को स्पष्ट करते हुए मृदुला गर्ग ने कहा है कि,"स्त्री—विमर्श को हमारे यहॉ स्त्रीवादी विमर्श के रूप में लिया

जाता है। भारत में स्त्री–विमर्श स्त्रीवादी विमर्श का लघुसंस्करण है। यह विमर्श अगर स्त्रीवादी है, तो वह सीधा–साधा पुरूष के बीच के संबंध, संघर्ष और अन्याय से संबंध रखता है।"[१]

इस तरह स्त्रीवाद पहले आंदोलन के रूप में हमारे सामने आया। बाद में वह नारी–विमर्श बना।

नारी–विमर्श की परिभाषा :–

समाजव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग नारी है। उसमें नर की अपेक्षा कुछ विशेष गुण दिखायी देते है। नारी विमर्श को देखते समय 'नारी' शब्द का अर्थ देखना जरूरी है।

आधुनिक हिंदी शब्दकोश में नारी का अर्थ– "नारी जो अनेक शब्दों के द्वारा ख्यात है, यौना, यौनिता, सीमान्तिनी, निता, वामा दारा, कलत्र, महिला, नारी, अबला, वधू, जनी, जोषा आदि।"[२]

"हिंदी विश्वकोश में नारी का अर्थ है – नारी, स्त्री वामा, महिला, प्रिया।"[३]

"हिंदी शब्दसागर में नारी का अर्थ है – नारी, स्त्री, औरत।"[४]

"नालंदा विशाल शब्दसागर में नारी का अर्थ है – औरत, नारी, स्त्री।"[५]

इसतरह नारी को विविध शब्दकोशों में विभिन्न नाम दिए है। नारी का अर्थ जानने के बाद नारी के साथ विमर्श शब्द किसप्रकार आता है, यह जानना जरूरी है। यह आधुनिक काल का विकसित रूप है।

---

१. सं. प्रभाकर श्रोत्रिय – नया ज्ञानोदय, जुलाई २००५ पृष्ठ – ४२
२. सं. गोविंद चातक – आधुनिक हिंदी शब्दकोश – पृष्ठ ३०८
३. नगेंद्रनाथ वसू – हिंदी विश्वकोश, पृष्ठ ६९१
४. श्याम सुंदर दास – हिंदी शब्दसागर, पृष्ठ २५६४
५. श्री नवलजी – नालन्दा विशाल शब्दसागर पृष्ठ – ६९४

नारी–विमर्श में दो शब्द आते है। नारी + विमर्श = नारी विमर्श है। विमर्श के अर्थ का जान लेना आवश्यक है। राजपाल हिंदी शब्दकोश में 'विमर्श' का अर्थ दिया है – "विचार, विवेचन, परीक्षण, समीक्षा, तर्क।"[१]

नालन्दा विशाल शब्दसागर में "विमर्श" का अर्थ है – किसी बात का विचार या विवेचन, आलोचना, समीक्षा, परीक्षा, परखने का काम, परामर्श, अधीरता।"[२]

आधुनिक हिंदी शब्दकोश में 'विमर्श' का अर्थ है – "सोच विचार का तथ्य या वास्तविकता का पता लगाना, विचार करना, सोच–विचार, जॉचना, परखना, गुण–दोष आदि की आलोचना या मीमांसा करना।"[३]

नामवरसिंह ने भी विमर्श को हिंदी में मिशेल फूको के 'डिस्कोर्स' का अनुवाद माना है।"[४]

'विमर्श' को फूको ने 'डिस्कोर्स' (**Discourse**) कहा है। उनके मतानुसार – 'विमर्श' का मतलब किसी एक वस्तु के बारे में लागों के बातचीत करने के तरीके या सोचने की पद्धती से है। ये तरीके मिलजुलकर लोगों की सामान्य धारणा को बनाते है।"[५]

विमर्श 'डिस्कोर्स' के अर्थ में बातचीत करने से है। यहॉ विमर्श का मतलब होता है कि साहित्य में स्त्री के संबंध में विचारों का शब्दोद्वारा आदान – प्रदान करना है।

---

१. राजपाल हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ २५०
२. नालन्दा विशाल शब्दसागर, पृष्ठ ५२९
३. आधुनिक हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ ५२९
४. सं. राजेन्द्र यादव – 'हंस' – नामवरसिंह के साक्षात्कार से, अगस्त २००४, पृष्ठ १९५
५. एस.एल.दोषी – आधुनिकता उत्तर आधुनिकता एवं नवसमाज शास्त्रीय सिद्धांत पृष्ठ, २४९

इसप्रकार हम कह सकते है कि 'नारी–विमर्श' नारीवाद के एक अंग के रूप में उभरकर आनेवाली व्यापक संकल्पना है।

मृणाल पांडे नारी–विमर्श को स्पष्ट करते हुए कहती है। कि, "नारी–विमर्श कतई स्त्रियों को बृहतर समाज से अलग–थलग रखकर देखने और हर क्षेत्र में पुरूषों के खिलाफ उन्हें प्रोत्साहित करने का दर्शन नहीं है यह तो एक समग्र दृष्टीकोण है।"[१]

आज के वर्तमान समय में नारी विमर्श, नारी के पूरे व्यक्तित्व को लेकर चलता है। नारी–विमर्श को साहित्य में लाने का प्रयास राजेंद्र यादवजीने किया। अर्चना वर्मा इस संबंध में कहती है – जैसे हाशिये पर के विषय को साहित्य के केंद्र में लाने का श्रेय राजेंद्र यादवीजी को है। उनकी पहल और उसके महत्व से कोई इन्कार नहीं कर सकता।"[२]

हिंदी के साहित्य में नारी–विमर्श के अंतर्गत नारी की आजादी, स्वायतत्ता, आत्मनिर्भरता, अस्मिता, संघर्ष, विरोध तथा विद्रोह आ जाता है।

किसी ने नारी विमर्श की कोई निश्चित परिभाषा नहीं की। फिर भी हम कह सकते है कि, नारी के पूरे व्यक्तित्व के बारे में उसका विवेचन करना, नारी–विमर्श है।

नारी–विमर्श का स्वरूप :– नारी–जीवन के बारे में साहित्य में अनेक विचार–विमर्श हुए है। बींसवी सदी के अंतिम कुछ दशकों में कुछ लेखिकाओं ने साहित्य में नारी को उसकी छवी प्रदान की है।

---

१. मृणाल पांडये – परिधि पर स्त्री, पृष्ठ ४७

२. सं. राजेंद्र यादव 'हंस' – अर्चना वर्मा के साक्षात्कार से, अगस्त २००४, पृष्ठ २१२.

राजेंद्र यादव का मानना है कि " स्त्री–विमर्श बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ही आया। यह स्त्री इतिहास और वर्तमान को एक स्वतंत्र 'अस्मिता' देता है।"[१] यह विमर्श, विद्रोह को लेकर चलता है।

समाज की तरह साहित्य में भी नारी–विमर्श का प्रभाव दिखाई देता है। नारी में विद्रोह की भाषा होती है, वह 'स्व' के बारे में सोचती है। नारी अपने विरोध तथा विद्रोह को व्यक्ती करती है। अपने क्षमताओं को सामने लाती है। अपनी समस्या तथा शारिरिक मानसिक शोषण और मजबूरी को बताती है।

अर्थात आज का नारी–विमर्श, नारी के बदलते स्वरूप की दखल लेता है।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि नारी विमर्श यह नारीवाद के एक अंग के रूप में प्रगतिवादी विचार है।

हिंदी साहित्य में महिला रचनाकारों के लेखन के रूप में इस विमर्श की पहचान स्पष्ट होती है।

नारी–विमर्श के अंतर्गत विवेच्य उपन्यासो के निम्नलिखित बातों को स्पष्ट किया जा सकता है।

५.१ नारी का वैधव्य जीवन :–

नारी के जीवन की सबसे दुखद अवस्था उसका 'विधवा' होना है। वैधव्य यह मूलत: जीवनक्रम में प्राप्त एक अरिष्टता है। वह एक अभिशाप है। और विधवा समस्या यह समाज की महत्वपूर्ण समस्या है। हिंदू समाज में उसका भयंकर रूप देखने को मिलता है। भारतीय संस्कृती में नारी के जीवन की सबसे दुखद घटना उसका 'विधवा' बनना है। अगर कोई हिंदू ब्राह्मण स्त्री विधवा बनती है,

---

१. सं. राजेंद्र यादव – संपादकीय से 'हंस' जनवरी २००५

तो उसकी जिंदगी बेरंग बनती है। स्त्री माथे पर लाल बिंदिया नहीं लगाती नहीं लगा सकती। हरी चुडियॉ नहीं पहन सकती, रंगीन साडी के बजाय उसे सिर्फ सफेद रंग की साडी पहननी पड़ती है। लज्जतदार मीठा खाना नहीं खा सकती। तीज–त्यौहारों में शुभ कार्य में उसका आना अशुभ माना जाता है। इस तरह हिंदू समाज में विधवाओं पर अनेक पाबंदीया लगाई जाती है। उसका दयनीय रूप हमें देखने को मिलता है। 'विधवासमस्या' यह समाज की महत्त्ववपूर्ण समस्या है। इस संबंध मे डॉ. सुरेन्द्र प्रताप यादव लिखते है, "भारतीय समाज में नारी के वैधव्य जीवन की समस्या कोई नयी समस्या नहीं है। आज भी वह थोडे – बहुत परिवर्तन के साथ अभिशाप स्वरूप विद्यमान है।"[१]

पति के मृत्यु के पश्चात विधवा नारी का जीवन नीरस, मूल्यहीन, निस्सहाय और अधूरा बन जाता है। भारतीय हिंदू समाज में विधवा समस्या अत्यंत भयंकर रूप से दिखाई देती है। वैसे तो नारी पुरूषो की उपेक्षा, शोषण और घृणा का शिकार है। किंतु ज्यादातर अत्याचार विधवा नारी पर किए जाते है। आज भी उसकी स्थिती दयनीय है। भारतीय नारी विधवा होने पर अनेक कठिनाईयों का सामना करते हुए विवशता में अपना जीवनयापन करती है। शुभ कार्यो में जैसे धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक कार्यो में तथा उत्सव, त्यौहारों में विधवा नारी सहभागी नहीं हो सकती क्योंकि उसकी मौजूदगी अशुभ मानी जाती है। विधवा को भ्रष्ट, पापिनी, कुल्टा ऐसे कई नामों से पुकारा जाता है। विधवा की सारी इच्छाएं,

---

१. डॉ. सुरेन्द्र प्रताप यादव – स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण यथार्थ और समाजवादी चेतना, पृष्ठ १०३, १०४.

व्यक्तिगत अभिलाषाएँ समाज की झुठी मान्यताओं के कारण चूर–चूर कर दी जाती है।

विधवा नारी को पंरपरावादी मर्यादाओं के कारण अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को कुचलकर सामाजिक तथा पारिवारिक जीवन में अपमानित, बेबस, असहाय्य, शापित तथा लांच्छनास्पद जीवन जीने के लिए मजबूर किया जाते है। उसपर अनेक प्रकार के जुल्म किए जाते है। नारी के वैधव्य के पश्चात उसकी मान–मर्यादा, प्रतिष्ठ तथा सुरक्षा समाप्त हो जाती है। विधवा को बहिष्कृत किया जाता है।

आज समग्र भारतीय समाज वैधव्य की बीमारी से जर्जर होता जा रहा है। आज इसी भारतीय समाज में विधवा नारी को जरा भी महत्व नहीं है। इसके बारे में प्रा. अर्जुन धरत का कहना है कि,"प्राचीन काल से रूढ़िग्रस्त समाजने विधवा नारी को हीन समझा तथा उसके साथ घृणामय निर्ममता से बर्ताव किया है।"[१]

विवेच्य उपन्यासो में मैत्रेयीजी ने एक ओर विधवा नारी की विवशता चित्रित की है, तो दूसरी ओर विधवा नारी का पतिता रूप भी हमारे सामने आता है। विधवा नारी को चक्की के दो पाटों के बीच पीसतें दिखाया है। एक ओर वह वह रूढ़िवाद से प्रताड़ित है, तो दूसरी ओर उसके आदर्शवादी है।

प्रताप नारायण श्रीवास्तव के अनुसार,"हिंदू विधवा को विधवा नहीं मानतें क्योंकि हिंदू विधवा ईश्वर का तपरूप है। उसकी तपस्या निर्गुण उपसना है। परंतु लेख के चित्र के दुसरे पक्ष से अपरिचित नहीं है। सभी विधवाएँ इस विराट तप की साधना नहीं कर सकती

---

१. प्रा. अर्जुन धरत–नागार्जुन के नारीपात्र (पृ. १२८)

उनके लिए वैवाहिक जीवन ही श्रेयस्कर निश्चित किया है।"[१]

'चाक' उपन्यास की रेशम, जो उम्र में पचीस से ऊपर नहीं होगी। उसका पति करमवरी फौज में थे। वह विषैली दारू का शिकार बनकर मर गया और रेशम विधवा हो गयी। वह करमवीर को गालियॉ देती है कि बीच शह में छोड़कर, मौत—सौत के संग वह चला गया। बाद में रेशम उदासी में यहॉ—वहॉ भटकने लगी। उसकी सारी जिंदगी बरबाद हो गयी ऐसा वह मानने लगी।

"रेशम विधवा थी, जमाने के लिए रीती—रिवाजें के लिए, शास्त्र—पुराणों के चलते घर और गॉव के लिए। विधवा सिर्फ विधवा होती है। वह औरत नहीं रहती फिर।"[२] यह बात रेशम को पता नहीं थी या उसे किसीने भी समझाया नहीं।

इस तरह से हमारे देश में प्रचलित भ्रष्ट व्यवस्था की नारीविषयक चित्तीय अमानुषता विधवाओं के उमंग ही नही तो उसके जीवन के सारे सुख—स्त्रोतों को भी तोड देती है। 'चाक' की रेशम की प्रकृती सुलभता को रेखांकित करते हुए मैत्रेयी लिखती है, "पतझड में जिंदा पेड की पत्तियॉ जिस तेजी से गिरती है, बसंत में कोंपले उसे एसे ज्यादा तेज रफ्तार से फूटती है।"[३] किंतु वैधव्यगत नैतिकता के चलते रेशम न 'मनुष्य' थी—और नही साधारण 'जीव' वह तो जड़ वस्तू से भी बदतर मात्र 'विधवा' थी। प्रपंचकारिता से बेफिक्र रेशम यही मानती रही कि,"पेड़ हरा भरा रहे तो फल—फूल क्यों नही लगेंगे? ऐसा हो सकता है कि ऋतु आए और बल्लरी

१.शिवनारायण श्रीवास्तव, हिंदी उपन्यास, पृष्ठ २८१
२.मैत्रेयी पुष्पा चाक, पृष्ठ १८
३.मैत्रेयी पुष्पा चाक, पृष्ठ १८

लता फूले नहीं? औरत ऋतुमती हो और आग दहके नहीं?"[१]

'चाक' उपन्यास की रेशम विधवा होकर भी पॉच महीने में गर्भवति बन जाती है। इस बात का पता जब उसकी सास को हुआ, तो उसका जीना हराम किया। सास हुकुमकौर बहू रेशम को कुलच्छिनी कहकर उसे गालियॉ देती है। पागलों की भॉती कहती है कि,"रंडी, मेरे पूत की चिता तो सीरी हो जाने देती।"[२] और उसे खरी–खोटी सुनाती है। वह रेशम की इस भूल को ढॅकने के लिए देवर डोरिया की बॉह थामने को कहती है। घर की लाज बनाए रखने को कहती है। लेकिन इस बात से रेशम इन्कार करते हुए कहती है,"अम्मा तुम बूढ़ी होकर भी ऐसी बातें करती हो? पितासमान जेठ का हाथ पकड लूँ?"[३] इस बात पर दोनों में झगडा होता है।

रेशम की सास उसे मायके जाने को कहती है। लेकिन यह बात रेशम नही सूनती तो सास रेशम को शर्तिया दवा देकर उसे मारने की कोशिश करती है, लेकिन गिलास के हाथ से छुट जाने कारण रेशम बच जाती है। फिर हुकुमकौर उसकी चोटी पकडकर इतना मारती है कि वह लहूलुहान हो जाती है। अगर डोरिया ऐन वक्त पर न आता तो उसकी जान लेती। इस बात को रेशम अपनी बहन सारंग को बताती है कि,"बीबी, वे लोग कभी मुझे देवी बनाते है, तो कभी राच्छसी। उसका ठौर मंदिर में होता है और राच्छसी लोगों का सत्यानाश करती है। मैं दोनों की तरह नहीं। हाड–मांस की बनी हुगाई, जिसके पेट में बालक हैं, उसपर या तो जल–दूध

---

१. मैत्रेयी पुष्पा चाक, पृष्ठ १८
२. मैत्रेयी पुष्पा – चाक, पृष्ठ – १९
३. मैत्रेयी पुष्पा – चाक, पृष्ठ – १९

ढोरेंगे या फिर....."[१]

इसप्रकार रेशम के विधवा होनेपर उसपर हुए अत्याचारों का बयान वह अपनी बहन सारंग को बताती है।

इसतरह, रेशम के विधवा होने पर उसके ससूरालवाले उसपर अनेक अत्याचार करते है ओर आखिर में उसकी हत्या की जाती है।

'चाक' उपन्यास की दूसरी विधवा पांचन्ना बीबी जो एक बालविधवा थी। उसके बाप ने उसका घर से बाहर निकलना, किसी से बातें करना बंद किया था। एक दिन वह भूल गई कि वह विधवा हैं और सात परदो को फाड़कर उसने मेहताबसिंह से ऑखे लड़ा ली। इसलिए उसकी चूचियॉ दाग दी गई। इसतरह पाशविक अत्याचार किया गया था। इसके अतिरिक्त तीसरी विधवा लौंगसिरी बीबी की मॉ हरिप्यारी एक विधवा के रूप में हमारे सामने आती है।

अत: स्पष्ट होता है कि विवेच्य 'चाक' उपन्यास में वैधव्यगत मर्यादाओं के अमानवीयता का यथार्थ अंकन प्राप्त होता है।

'अगनपाखी' की नानी याने भुवन की मॉ विधवा होने पर उसकी बच्ची की जिम्मेदारीयॉ उसपर आती है। वह अकेली होकर भी खेतों में काम करती है। मुखिया के लोगों ने उसके पति को मारा था। उसे लगता था कि उन सबकी जान लेलें, जिन्होंने उसके पति को मारा है। इतने उसके हौसले बुलंद दिखते है।

'अगनपाखी' की भुवन भी मनोरूग्ण पति विजयसिंह के मृत्यु के पश्चात विधवा बन जाती है। उसके ससूरालवाले विधवा होने पर उसे सती चढ़ाना चाहते है। उसके देवर उसकी जायदाद हथियाना चाहते है। इन लोगो की चंगुल से बचने के लिए रेशम पुजारीजी

१.मैत्रेयी पुष्पा — चाक, पृष्ठ — १

की मदद से भाग जाती है। क्योंकि वह सति नहीं जाना चाहती थी।

'अगनपाखी' की नानी पुरानी पीढ़ी की नारी होने से अपने संस्कारों के गिरफ्त के कारण वैधव्यगत मर्यादाओं के प्रति समर्पण करती है। लेकिन नई पीढ़ी की चाक की रेशम और अगनपाखी की भुवन आदि नारियॉ अपने सामंती संस्कारो को निकाल फेंकते हुए वैधव्यगत मर्यादाओं को तोड़ देती है।

❖ विधवा नारी का शोषण :—

भारतीय समाज की विधवा समस्या यह एक महत्वपूर्ण समस्या है। हिंदू समाज में उसका भयंकर रूप दृष्टीगोचर होता है। इस संदर्भ में डॉ. महेंद्र भटनागर कहते है,"यो तो वर्तमान हिंदू समाज में समग्र नारी—जीवन पुरूष वर्ग की तिरस्कार, दमन तथा उपेक्षा भावना का शिकार है, लेकिन सबसे अधिक अत्याचार और शोषण की प्रतिमूर्ति एक मात्र विधवा ही है।"[१] उसे इन झुठी मान्यताओं की सीमाओं में बॅधकर रहना पड़ता है।

राजाराम मोहनराय (१९७२—१८३३) के प्रयास से सतिप्रथा को कानूनन बंद किया गया जिसमें औरते अपने पति की चिता में जलकर मर जाती थी। इस प्रथा के बंद होने के बाद नारी का विधवा रूप सामने आता है। आज भी समाज में विधवा नारी का वहीं स्थान है, जो पहले था। योगेश सूरी के अनुसार,"हिंदू समाज में विधवा नारी सबसे तुच्छ और निराश्रय प्राणी मानी जाती है और उसके वैधव्य को नारी का अभिशाप माना जाता था।"[२] इससे स्पष्ट होता है कि पति के मरने के बाद नारी निराश्रित, निसहाय तथा

---

१. डॉ. महेंद्र भटनागर — समस्यामूलक उपन्यासकार — पृष्ठ १६३

२. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ १८

पराधीन हो जाती है। पति के रहते जो नारी समाज में सिर उठाकर जीती है वहीं विधवा होने के कारण समाज में मुँह छुपाने के लिए मजबूर होती है। परिवार में उसे सभी अधिकारों से वंचित किया जाता है। उसे समाज और अपने संबंधियों से अनंत यातनाएँ मिलती है।

'चाक' की रेशम पचीस साल से भी कम आयु में भी कम आयु में विधवा बन जाती है। विधवा होने पर वह अपनी यौन–इच्छाओं को काबू में नहीं रख पाती, वह सामाजिक बंधनो को निभाने में असमर्थ होती है। और वह पॉच महीने में ही गर्भधारण करती है। उसके ससूरालवाले पहले उसके विधवा होने पे नाराज थे। उन्हें लगता है कि वह उनके बेटे को खा गयी। लेकिन उसका कोई दोष नहीं, उसका पति बीच राह में छोडकर चला गया। रेशम की सास को इस बात का पता चलने पर वह उसका जीना हराम करती है। उसकी सास गालियॉ देते हुए कहती है, "मेरे बेटे की मौत से दगा करनेवाली हरजाई बदकार। तेरा मुँह देखने से नकर मिलेगा, खेती जलेगी, अकाल पडेगा। गंगा में सौ अस्नान करो, तो भी यह महापाप छूटना नहीं।"[१]

इसतरह रेशम की सास उसका मानसिक शोषण करती है। रेशम के पेट का बच्चा गिराने के लिए उसे शर्तिया दवा देना चाहती है लेकिन गिलास हाथ से छूट जाने के कारण रेशम की जान जाती है। इसी वजह से सास हुकुमकौर रेशम की चुटीया पकडकर कहती है,"फस्सा, तू मेरी देहरी पर लेंडिया हरामी जनेगी? बोल, छिनार,

---

१. मैत्रेयी पुष्पा – चाक – पृष्ठ २१

बोल!"[१] इसतरह सास ने रेशम को इतना मारा की वह लहूलुहान हो गयी। अगर डोरिया सही वक्त पर नहीं आता, तो शायद उसकी जान लेती।

रेशम के विधवा होकर भी मॉ बनने पर समाज भी एतराज करता है। रेशम अपनी बहन सांगर को बताती है कि,"हॉ हुक्का पानी छिकेगा इनका। पॉत–पंगत से अलग किए जाएँगे। सांरग बीबी, बिरादीर भी अजब चीज है। मेरे बच्चे की हत्या करवाकर ही इन्हें अपने में शामिल रखेगी।"[२]

एक दिन सचमुच उसके ससूरालवालों ने उसकी हत्या की। रेशम की सास उसे देवर डोरिया से ब्याह करने को कहती है। रेशम इस बात से इन्कार करती है। रेशम का देवर डोरिया उसे मिट्टी के ढेर के नीचे गाड देता है। इसतरह विधवा नारी का शोषण वहॉ परिलक्षित होता है।

'चाक' में रेशम के ससूर साधजी के बड़े बेटे नत्था के लिए खरीदी हुई लड़की बैकुंठी थी। नत्था के मर जाने के बाद वह विधवा बन जाती है। तो उसका देवर थानसिंह उसे अपने लिए बिठा लेता है और उसका हिस्सा हथियाता है। बैकुंठी का मानसिक एवं भौतिक शोषण करता है।

'चाक' की हरिप्यारी और 'अगनपाखी' की नानी आदि का वैधव्यजीवन मर्यादापालन के बाद भी शोषण से खाली नहीं रहा। ये सब अपनी स्वकीयजनों से भावनात्मक स्तर पर शोषित रही।

'अगनपाखी' की भुवन मनोरूग्ण पति विजयसिंह के मृत्यु के बाद विधवा बन जाती है। विधवा होने पर उसे पति के साथ सति

---

१. मैत्रेयी पुष्पा – चाक – पृष्ठ २१
२. मैत्रेयी पुष्पा – चाक – पृष्ठ २१

जाने के लिए मजबूर किया जाता है। सती जाने के डर से भुवन बहुत रोने लगती है। "जिंदा जल जाना ही उसकी नियति है....सोचते ही भुवन को कैसा तो डर लगा और डर के मारे वह तड़पकर रो उठी। नारी अंक में सती होती स्त्री .... और रोई, रोती गयी! कहीं रास्ता न था।"[१] इस तरह की हालत सती जाते वक्त हो गयी। वह भाग जाना चाहती है। जब सास उसे आखिरी इच्छा पूछती है। तो भुवन आखिरी बार देवी की पूजा करना चाहती है। वह मंदिर में जाकर पूजारीजी की मदद से उन लोगों के चुंगुल से भाग जाती है। इस तरह विधवा नारी का शोषण दिखाई देता है।

विधवा नारी का जीवन तथाकथित मर्यादाओं के निर्वाहन तथा उल्लंघन दोनो स्थितियों में शोषित रहा। विवेच्य उपन्यासों में वैधव्य जीवन की अभिशप्तता के मूल में निहित रूढिव्यवस्था के भ्रष्ट तत्वों तथा अवधारणाओं का पर्दाफाश किया गया है।

❖ नारी के प्रति सामाजिक हिंसा :—

नारी, जीवन के हर क्षेत्र में समान रूप से कार्य सक्षम होने के कारण सर्वत्र पुरूष के तुल्य रहने की अधिकारिणी है। वह पुरूष की अनुगामिनी मात्र न होकर सहधर्मिणी और सहचरी भी है।

नारी के भिन्न–भिन्न नाम रूपों के आधार पर उसके स्वरूप की परिकल्पना की जा सकती है।

वह प्रहर्षकारिणी मानवी, जिसमें लज्जा, रागात्मकता, चेतना, कमनीयता है। 'पूर्ण नारी' कहलाने की अधिकारिणी है। इसके अतिरिक्त पुरूष सापेक्ष पूर्णत्व की अनिवार्यता उसके साथ निसर्गत:

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — अगनपाखी — पृष्ठ १८

संबंद्ध है। नारी का यह स्वरूप कविवर प्रसाद की इन पंक्तियों में पूर्णत: साकार हो उठता है।

"नारी, तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत—नगर—पगताल में।"
पीयूष—स्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।"[१]

मावन जीवन का सच्चा सौंदर्य इसी 'नारी' नाम में निहित है। लेकिन इसी नारी के प्रति सामाजिक हिंसा का रूप हमें विवेच्य उपन्यासों मे देखने को मिलता है।

'चाक' उपन्यास की शोषित नारी रेशम भी समाज की नैतिक बंधनो का शिकार बनी है। रेशम की ससूरालवाले उसके पाप को छिपाने के लिए देवर डोरिया की बॉह थामने के लिए कहते है। लेकिन रेशम जब इस बात से इन्कार करती है तब उसकी सास विषैली दवा देकर उसके बच्चे को मारने की कोशिश करती है। लेकिन गिलास के हाथ से छूट जाने के कारण रेशम बच जाती है। फिर भी उसकी बुढी सास उसे मारकर लहूलूहान करती है। अपनी यह हालत रेशम अपनी बहन सारंग को सुनाती है,"बीबी, वे लोग कभी मुझे देवी बनाते है तो कभी राच्छसी। देवी तो पथर की होती है, उसका ठौर मंदिर में होता है और राच्छसी लोगों का सत्यानाश करती है। मैं दोनों की तरह ही नहीं। हाड—मांस की बनी लुगाई, जिसके पेट में बालक है, उस पर या तो जल—दूध ठारेंगे या फिर....। मेरी सास मेरे बालक की हत्या पर उतारू है।"[२] रेशम की यह हालत देखकर सारंग उसे अपने घर रहने को बुलाती है। लेकिन रेशम के हौसले बुलंद है। रेशम को लगता है कि गॉव के लोग इतने बूरे है कि अगर वह सारंग के घर रहने जाए तो उसके पेट का बच्चा

---

१. जयशंकर प्रसाद — कामायनी, लज्जा सर्ग, पृष्ठ ८४.
२. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ २१

जीजा रंजीत के सिर मढ़ देंगे। गॉव के गए गुजरे समाज के खोखले विचारों से रेशम घृणा करती है। रेशम के घर का वातावरण कुछ दिनों में बदल गया। सभी लोग उसके साथ प्यार से व्यवहार करने लगे। उन लागों की दिखावे की बात रेशम जान न सकी। लेकिन सारंग के मन में जिसका डर था वहीं हुआ। रेशम उन लोगों का बली के बकरी की तरह शिकार हुई। सारंग सोचती है,"मेरी बहन कबूतर और हिरन की तरह ही भरमाकर मौत के घाट उतार दी"[१]

गॉव के लोगों ने रेशम का साथ नहीं दिया। समाज के खोखले विचारों के कारण उसे अपनी जान और बच्चा भी गॅवाना पड़ा। यहॉ नारी के प्रति सामाजिक हिंसा का रूप देखने को मिलता है।

'चाक' की सारंग जब गुरूकुल में पढ़ती थी तब उसकी सहेली 'शकुंतला' भी उसके साथ थी। गुरूकुल में रहते समय उसकी भूल के कारण गर्भ रह गया था। जब गुरूकुल की माताजी को इस बात की खबर हुई तो उन्होंने उसेके पिताजी को बुलाया। उसके पिताजीने उसे अपने साथ ले जाने से इन्कार किया। और माताजी से कह दिया कि "इससे जुठे बर्तन मॅजवाईए कपडे धुलवाईए, सारे गुरूकुल में झाडू लगवाइए। कुछ भी कराइए, आपकी रजा पर है। मैं अपनी नाक कटाने किसी कीमत पर नहीं ले जाऊॅगा इसे। आज से मेरी बेटी नहीं, आपकी खादिमा है।"[२]

इसके बाद गुरूकुल की माताजीने शकुंतला को हवन से दूर मंत्रो से अलग, कक्षा से निकालकर उस कोठरी में डाल दिया गया, जिसमे लकडी भरी रहती थी। एक दिन सबेरे शकुंतला की लाश

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ २५

२. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ ९१

गुरूकुल की चारदीवारी के नीचे बाहर की ओर खरबूजे की तरह खिली पडी हुई दिखायी दी। इस तरह शकुंतला भी समाज की रूढ़ि–परंपराओं का शिकार बनी थी।

'चाक' की चंदना, जो सकल से प्यार करती थी। उसकी शादी कुँवरजी से हुई। फिर भी वह अपने प्यार को भुला नही पायी। बीच रास्ते में कुँवरजीने उसपर कटारी से वार किया। वहीं उसका जीवन समाप्त हुआ। यहाँ भी हमें सामाजिक हिंसा का रूप देखने का मिलता है।

अतरपूर गॉव की ग्रामसेविका केंद्र में काम कर रही ग्रामसेविका बहनजी बी.डी.ओ.द्वारा बलात्कृत हुई। इसलिए उसने उसके खिलाफ धरना धर दिया। बलात्कार के रूप में भी नारी पर हुए सामाजिक हिंसा का रूप दिखायी देता है।

'चाक' की बडी बहू की ननद, जो बालविधवा थी। जिसका नाम पांचन्ना बीबी था। वह जवानी में भुल गयी कि वह विधवा है। इसलिए उसके पिताने उसका घर से निकलना बंद किया और उसपर गहरे पहरे रखे। सात परदों को फाडकर वह मेहताबसिंह से ऑखे लड़ा बैठी। इसलिए उसके पिता ने गुस्से में नथिया भंगिन को बुलाकर उसकी छाती की चूचियॉ दाग दी। ताकि उसे जवानी की गुद्दियॉ फूटे नहीं। लेकिन बेचारी महीनों तक ऐसी चिंघाड उठी की घर कॉपने लगा।

इसतरह पांचन्ना बीबी भी सामाजिक हिंसा का शिकार हुई।

'चाक' उपन्यास के रेशम की हत्या हुअी, तब उसके पेट का बच्चा भी मर गया। यह भी एक भ्रूणहत्या है, जो सामाजिक हिंसा के रूप में हमारे सामने आती है।

'अगनपाखी' का विराटा गॉव सतियो के तीर्थस्थल के नाम से विख्यात है। दॉगी पिता नरपतसिंह की बेटी कुमुद एक साधारण लड़की थी। गॉव के देवी के मंदिर पर यवनों का हमला हुआ। मुगलों के हाथें मंदिर बच जाए इसलिए नरपतसिंह ने अपने बेटी को बलि जाने को कहा। और उसने बेतवा नदी में छलॉग लगाकर अपनी जान दी। यहॉ भी अंधश्रद्धा के रूप में सामाजिक हिंसा देखने को मिलती है।

विराट गॉव के जमींदार की बहू भुवन को अकाल वैधव्य प्राप्ति पर सति हो जाने के लिए बाध्य बनाने की साजिशे रची गई। गॉव के लोग उसके दर्शन हेतू जुट आए, उसका साज श्रृंगार किया और उसकी अंतिम चाहत पूछी गयी। अपनी अंतिम चाहत के रूप में साजशृंगार कर मंदिर गई भुवन उन लोगों की चंगुल से भाग गयी। लेकिन इधर उसके ससूरालवालोने भुवन का पूतला बनाया और उस पुतले को सुहागिन की तरह सजाकर पति विजयसिंह के पार्थिव शरीर के साथ चिता को समर्पित किया। यहॉ नारीविषयक सामाजिक हिंसा के सतीरूप का यथार्थ अंकन हुआ है।

सनातनी अवधारणाओं से ग्रस्त भुवन की विधवा सास अपने अंतरंग को खोलते हुए कहती है, "अजय के बाप चले गए, लौटे नहीं... सती होना तो हमारा फरज बनता था, पर इतने पुन्न परताप कहॉ की सुरग की राह धरते।"[१] यहॉ भुवन की सास सति के कर्तव्य को बताती है।

विवेच्य उपन्यासों मे विधवाओं के हत्या के रूप में यथार्थ अंकन हुआ है। तथा नारीविषयक सामाजिक हिंसा के रूप का भी यथार्थ

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — अगनपाखी — पृष्ठ

अंकन हुआ है।

५.४ नारी के प्रति व्यभिचार :—

भारतीय संस्कृती में एक और नारी ओर नारी की देवीरूप में पूजा की जाती है, तो दूसरी ओर उसे राक्षसी मानकर उसके साथ घात—पात किया जाता है। भारतीय जीवन पद्धती की समग्र गरिमा और अर्थवत्ता की आधार परिवार परिकल्पना है और उसकी सार्थकता नारी के बिना संदिग्ध है। जननी, जाया और जीवन संगिनी जैसे रूपों में वह परिवार की संचालिका है।

भारतीय विधान संहिता के नियामकों में प्रसिद्ध महर्षि मनु ने घोषणा की थी कि, जहॉ नारी की पूजा होती हैं, वहॉ देवता रमण करते है। आज उसी देवतारूपी नारी की व्यभिचारिता के नाम पर हत्या की जाती है।

विवेच्य उपन्यास में ग्रामीण नारी की दयनीय स्थिती का चित्रण परिलक्षित होती है। ग्रामीण नारी आज भी प्राचीन रूढ़ि—परंपराओं मे घिरी हुई है। ग्रामीण नारी का स्वतंत्र अस्तित्व कहीं नहीं है। बल्कि नारी के प्रति व्यभिचारीता के दर्शन जगह—जगह पर दिखाई देते हैं।

'चाक' उपन्यास की नायिका सारंग की बहन रेशम है। उसके पति करमवीर विषैली दारू का शिकार होकर फौज में ही उसकी मृत्यु हो जाती है। रेशम पचीस साल की आयु में विधवा हो गयी थी। "पच्चीस साल की उम्र कोई उम्र होती है। जवानी पूरी तरह परवान नहीं चढ़ी कि विधवा हो गयी रेशम। मन भी भटक सकता है।"[१]

रेशम विधवा होने के बाद भी गर्भवति हो जाती है। उसकी सासपर उसपर बहुत अत्याचार करती है। उसका गर्भपात कराना

१.मैत्रेयी पुष्पा — अगनपाखी — पृष्ठ १८

चाहती है। वह घर की इज्जत बचाने के लिए देवर डोरिया की बॉह थामने को कहती है। इस बात से जब रेशम इन्कार करती है, तब देवर डोरिया उसकी हत्या करता है। यहॉ व्यभिचारता के नाम नारी–हत्या के दर्शन होते है।

'चाक' की गुलकंदी को गंधर्वविवाह करने के कारण तथाकथित व्यभिचारिता के अपराध में उसके चचेरे भाई हरपरसाद ने उसकी मॉ हरिप्यारी और प्रेम बिसनुदेवा सहित जलाकर मार डाली।

'अगनपाखी' की वनदेवी गॉव के देवी की मूर्तिपर चमेली के फूल चढ़ाती थी। वह घर के किसी आदमी की हवस का शिकार हुई थी। यह बात मॉ को पता चली तब मॉ ने कहा, "बिटिया, अब तेरा कहीं निस्तार नहीं सारे जतन कर लिए। तू विराटा की देवी की तरह बेतवा मइया की गोद में समा जा। देवी के नाम पर तेरी जै–जै कार होगी। हम कह देंगे, बरत उपासवाली भगतिन ने जन्म लिया था हमारे घर। देवी की भेंट हो गयी।"[१]

इसतरह वनदेवी को व्यभिचारता के नाम पर आत्महत्या के लिए बाध्य बनाया। उसने मॉ के कहने पर बेतवा नही में वनदेवीने जलसमाधी ली।

अत: स्पष्ट है कि विवेच्य कथासाहित्य में तथाकथित व्यभिचार के नाम पर औरत की हत्या का यथार्थ चित्रण हुआ है।

५.५ नारी हत्या तथा भ्रूण हत्या –

बीसवीं शताब्दी को 'नारी उत्थान युग' माना जाता है। फिर भी आज की नारी की स्थिती में काफी परिवर्तन आया है, ऐसी बात नहीं है। आज भी उसे दहेज, हत्या, वैधव्य, भ्रूणहत्या आदि का सामना

---

१. मैत्रेयी पुष्पा – अगनपाखी – पृष्ठ १२०

करना पड़ता है। समाज में उसका स्थान गिरा हुआ है।

नारी–मुक्ति, नारी–रक्षा, नारी–शिक्षा, आरक्षण आदि कई रूपों मे नारी जीवन में सुधार लेने का प्रयास किया जा रहा है। नारी को 'अर्धांगिनी' मानकर उसकी महत्ता बढ़ाने की बात की गई है, मगर उसका अबला रूप ही आज हावी है।

हमारे समाज में पुरूष की अपेक्षा नारी की स्थिती हीन और दयनीय रही है। आज तक भारतीय नारी पुरूष से अपमानित और लांछित होती रही है। पुरूष की दृष्टि में न तो नारी के गौरव का कोई अर्थ है और न उसके समर्पण का। समाज ने नारी के सथ हमेशा छल और विश्वासघात कर उसका शोषण करके उसकी हत्या कर दी है।

'चाक' की रेशम भी सामाजिक बंधनो का शिकार बनी। रेशम विधवा होकर भी गर्भधारण करती है। जो समाजव्यवस्था के खिलाफ है। रेशम के ससूरालवाले इस पाप को छुपाने के लिए रेशम को देवर डोरिया से शादी करने को कहते है। इसके लिए जब वह तैयार नहीं होती तो उसकी सास हुकुमकौर उसका पेट बच्चा गिराने के लिए शर्तिया दवा पिने को देती है। लेकिन गिलास के हाथ से छूट जाने के कारण उसकी जान बच जाती है। उसके ससूरालवाले रूढिग्रस्त समाज के नियम–बंधनो के कारण उसकी हत्या करने की ठान लेते है। और एक दिन देवर डोरिया उसे मिट्टी के ढेर के निचे गाड देता है। इसतरह यहॉ नारी हत्या के साथ भ्रूणहत्या का चित्रण दिखायी देता है।

'चाक' के अतरपूर गॉव में ऐसी कई नारीयॉ थी, जिनकी हत्या हुअी। उनमें चंदना का समावेश होता है। चंदना विवाह से पहले

सकल सोनार से प्यार करती थी। उसका विवाह कुँवरजी के साथ होनेपर जब उन्हें चंदना के प्रेमी के बारे में पता चलता है तो बीच जंगल में कटारी से वार करके कुँवरजी चंदना की हत्या करते है। यहाँ नारी हत्या का उदाहरण मिलता है।

इसतरह गाँव की अनेक औरतों ने अपनी हत्या की। खेरापतिन दादी सभी को गाँव की सारी घटनाएँ बताती है कि, "इस गाँव के इतिहास में दास्ताने बोलती है — रस्सी के फंदेपर झुलती रूक्मिणी कुँए में कुदनेवाली रामदेई, करबन नदी में समाधिस्त नारायणी... ये बेबस औरते सीता मईया की तरह 'भूमि प्रवेश' कर शील—सतीत्व की खातिर कुरबान हो गयी। ये ही नही और न जाने कितनी....।"[१]

'रामायण' में सीता को एक नाई की बातो की वजह से से अग्निपरिक्षा देनी पडी थी। आयोध्या वापस आनेपर लोग अब सीता के शील सतीत्व के बारे में संशय लेते है तब वह अपने माँ गोद में समा जाती है और भूमिप्रवेश करती है। सीतादेवी होकर उसे परीक्षा देनी पडती है वैसे अनेक सामान्य नारी को भी अग्निपरीक्षा से गुजरना पड़ता है।

'चाक' की गुलकंदी जो गंधर्व विवाह करनेवाली थी। उसे व्यभिचारिता के अपराध में चचेरे भाई हरपरसाद ने माँ हरिप्यारी तथा प्रेमी बिसनुदवा के साथ घर को आग लगाकर उनकी हत्या कर डाली।

हमारे देश में भ्रूणहत्या यह एक बहुत बड़ी समस्या बन गयी है। राजस्थान, बिहार जैसे राज्यों में बेटियों के पैदा होने से पहले ही उनकी पेट में ही हत्या की जाती है। और बेटी के पैदा होते ही उसके शादी की तैयारी करनी पड़ती है। शादी में बेटियों को मैत्रेयी

---

१. पुष्पा — चाक — पृष्ठ ७

बहुत दहेज देना पड़ता है। उसके दहेज के लिए मॉ—बाप को बचपन से ही पैसा धन इकठ्ठा करना पड़ता है। इस दहेज की समस्या से मॉ—बाप बचना चाहते है। एक तो बेटा घर का चिराग भी माना जाता है। इसलिए ज्यादातर लड़कियों की भ्रूणहत्या की जाती है। इस परिस्थिती को देखकर लगता है कि एक समय ऐसा आएगा की लड़कियों की संख्या कम होकर लड़कों की संख्या बढ़ जाएगी। जिसतरह पॉच पांडवों की एक द्रौपदी थी, उसी तरह की स्थिती शादी के मामले में आ जाएगी।

आज हमें देखने को मिलता है कि सायन्स आगे निकल गया है, इसलिए पेट में गर्भ लिंग की जॉच की जाती है। इस पर कानून ने पाबंदी लगायी है। फिर भी कुछ लोग बेटा हो इसलिए गर्भलिंग परीक्षण कराके बेटीयों की हत्या करते है। भ्रूणहत्या का चित्रण हमें विवेच्य उपन्यासों में देखने को मिलता है। कुछ लड़कियॉ शादी से पहले गर्भवति बनती है तो भी भ्रूणहत्या करके अपना पाप छिपाने का प्रयत्न करती है।

'चाक' उपन्यास की सारंग जब शादी से पहले गुरूकुल में रहती थी। तब उसकी सहेली शकुंतला भी शादी से पहले मॉ बननेवाली थी। गुरूकुल के माताजी ने उसके पिता को वापस घर ले जाने के लिए बुलाया लेकिन उन्होंने समाज और बिरादरी के डर से उसे अपने साथ वापस ले जाने से इन्कार किया। शकुंतला गुरूकुल के सारे काम करती, बाद में उसे बंद कोठरी में रखा गया था। उसपर अनेक अत्याचार हुए इसलिए उसने आत्महत्या कर डली, साथ में भ्रूणहत्या का पाप अपने सिर चढ़ा गयी।

'अगनपाखी' की वनदेवी को भी विवाह से पहले गर्भ रह गया। इसलिए उसकी मॉ ने इस पाप को छिपाने के लिए उसे बेतवा नदी में छलॉग लगाने को कहा, इस तरहा उसकी आत्महत्या न होकर समाज के डर से की गयी हत्या है। यहॉ भी नारी हत्या के साथ भ्रूणहत्या का चित्रण परिलक्षित होता है।

इसतरह भुवन को भी उसके विधवा होनेपर उसे सती जाने के लिए प्रवृत्त करते है। लेकिन वह रूढ़व्यवस्था से संघर्ष करती है।

इस तरह नारी–विमर्श के रूप में नारी हत्या तथा भ्रूणहत्या का चित्र दिखायी देता है।

५.६ अनमोल विवाह की समस्या :–

आज के पुरूष प्रधान समाज में नारी के विवाह के बार में उसकी भावनाएँ इच्छा–अनिच्छाओं को अनदेखा किया जाता है। नारी को माता–पिता एवं परिवार के लागों के इच्छा के अनुसार विवाह के बंधन में जखड़ा जाता है। किसी भी सीधी–साधी लड़की को किसी भी अपात्र व्यक्ति के गले बॉधकर मॉबाप अपना बोझ कम करते है। लेकिन लड़की की पूरी जिंदगी उनके कारणवश बरबाद हो जाती है।

अनमेल विवाह में पति–पत्नि की अलग–अलग इच्छाएँ होती है, वैचारिक दूरियॉ होती है, इसी कारण दानों एक दूसरे कों समझ नहीं पातें। परिणामत: दोनों में आपसी संघर्ष, अविश्वास और द्वेष बढ़ने लगता है। नारी तो समाज की नजरो में सुहागिन बनती है, लेकिन उसका जीवन तो पीड़ादायी बनता है। विवाह का बंधन उसे जखड़ने लगता है। इस बंधन से वह उब जाती है। और गलत रास्ता अपनाती है।

'चाक' की बैकुंठी का विवाह तेरह साल की अवस्था में उसके लालाची भाईने चालीस साल के नत्था से कर दिया था। उसके अकाल मरने पर वह विधवा बनती है। असमय वैधव्य प्राप्ति पर बैकुंठी को उसका देवर थानसिंह अपने लिए बिठाता है। बैकुंठी अभिशप्त जीवनयापन के लिए विवश हो जाती है।

'चाक' की जिरौलीवाली का ब्याह नपुसंक मनोहर से हुआ था। प्राकृतिक इच्छाओं के दमन के सदमें से वह मनोरोग का शिकार हुई तथा विवंचनाग्रस्त जीवनयापन के लिए मजबूर रही।

'चाक' की चंदना भी सकल से प्यार करती थी। लेकिन उसके मॉ ने कुँवरजी से उसकी शादी करायी। विवाह के बाद भी वह सकल सुनार को भूला नहीं सकी। उसके पतिने बीच रास्ते में कटारी से उसकी हत्या की। उसकी इच्छा की परवाह न करने के कारण उसे अपनी जान गवानी पड़ी।

'अगनपाखी' की भुवनमोहिनी का विवाह उसके जीजा मनोरूग्ण विजयसिंह के साथ करवाते है। अपने स्वार्थ के लिए उसका जीवन बरबाद करते है। इसतरह अनमेल विवाह का शिकार बनी भुवनमोहिनी मनोरूग्ण पति के साथ अभिशप्त जीवनयापन के लिए विवश होती है।

इसतरह अनमेल विवाह के मूल में यहॉ स्वार्थांधता, भ्रष्ट, सामाजिकता तथा नर–पशूता नजर आती है। डॉ. सुरंद्र प्रताप यादव के मतानुसार,"भारतीय समाज में अनमेल विवाह एक भयंकर सामाजिक दोष रहा है। परतंत्रा के नाते बहुधा नारी से उत्पन्न समस्याओं की वहीं शिकार हुई है।"[१]

---

१. डॉ. सुरेन्द्रप्रताप यादव – स्वातंञ्योत्तर हिंदी उपन्यास में ग्रामीण यथार्थ और समाजवादी चेतना पृ. १५४

इसतरह अनमेल विवाह की समस्या नारी–विमर्श के रूप मं दिखायी देती है।

५.७ नारी का परिवार में शोषण :–

जीवन के प्रत्येक स्तर पर नारी शोषण की जो व्यापकता, गहनता एवं बहुआयामता रूढ परिवार संस्था में जितनी होती है उतनी शायद किसी अन्य संस्था में नही। समाज की महत्वपूर्ण इकाई के रूप में परिवार महत्वपूर्ण है। नारी–विमर्श हेतू उसके पारिवारिक शोषण का विवेचन अनिवार्य है।

नारी का रूढ–परिवारिक संस्था में शारिरिक, मानसिक, भावनिक आदि कई आयामों से शोषण होता है। इस संदर्भ में क्षमा शर्मा लिखती है, "यह सच है कि परिवार थोडी–बहुत सुरक्षा तो लड़कियों को देता है लेकिन वह शोषण का सबसे बड़ा साधन भी है।"[२]

'चाक' उपन्यास के साधजी का संयुक्त परिवार है। उनके पॉच बेटे है। उसमें सबसे बडे बेटे नत्था के मर जाने पर उसकी पत्नी को दो नंबर का बेटा थानसिंह अपने लिए बिठाता है। नत्था की पत्नी बैकुंठी निरंतर उत्पीडीत एवं प्रताडित रही। उसके परिवारवाले उसका मानसिक शोषण करते है।

इसी परिवार की बहू रेशम जो करमवीर की पत्नी थी। उसके मर जाने के बाद विधवा रेशम पर उसके ससूरालवाले बहुत अत्याचार करते है। रेशम की सास हुकुमकौर रेशम को गालियॉ देती है उसे मारती है। उसके पेट के बच्चे को मारने की कोशिश करती है। बैकुंठी की तरह वह रेशम को भी देवर डोरिया की बॉह थामने को कहती है। इस तरह उसका शारिरिक ओर मानसिक शोषण पूरा

---

१. क्षमा शर्मा – स्त्री का समय, पृष्ठ २८

परिवार करता है। और एक दिन उसकी हत्या की जाती है। पिरूषसत्ताक परिवार की भ्रष्ट व्यवस्था ने 'चाक' की रेशम को दमन के लिए बाध्य किया और उसके अधिकारों का भी हनन किया।

'चाक' उपन्यास गजाधरसिंह का भी परिवार संयुक्त है। इस संयुक्त परिवार में बहू सारंग का भी बेटे चंदन के मामले में भावनात्मक शोषण होता है। तथा उसका पति रंजित भी उसका मानिसिक शोषण करता है।

सारंग से प्रतिशोधवश पति रंजित बेटे चंदन को आगरे भेजने लगा तो सारंग उसे रोकने लगती है। इससे बौखलाकर रंजीत उसे घूँसो से मारने लगता है। इसतरह उसका शोषण पतिद्वारा होता है। 'चाक' उपन्यास की बडी बहू, पांचन्ना बीबी आदि नारियॉ भी अपने — अपने परिवारों में कई वजहों से शोषित रही।

'अगनपाखी' की भुवन तथा मन्नू परूषसत्ताक की भ्रष्ट व्यवस्था में शोषित रही है। भुवन के ससूरालवाले उसका भावनिक तथा मानसिक शोषण करते है। मनोरूग्ण पति विजयसिंह की मृत्यू के पश्चात उसे सती जाने के लिए विवश किया जाता है। उसकी सास तथा देवर दोनों उसका मानसिक शोषण करते है।

'अगनपाखी' की मन्नू भी अपने परिवार में पति के कारण प्रताड़ित रहती है। तथा भुवन का मानसिकता के साथ आर्थिक स्तर पर भी शोषण होता है।

इसतरह विवेच्य उपन्यासों में संयुक्त परिवार में भ्रष्ट व्यवस्था के चलते नारी—जीवन के अमानवीय उत्पीडन एवं प्रताड़ना को दिखाया है साथ ही रेशम, सारंग, भुवन तथा मन्नू आदि के माध्यम से नारी का पारिवारिक शोषण दिखायी देता है। इस संदर्भ में कमला भसीन

ठीक ही लिखती है, "क्या परिवार वो जगह नहीं है, जहॉ औरतों पर सबसे ज्यादा जुल्म होता है। उनके साथ सबसे ज्यादा भेदभाव होता है।"[१]

५.८ नारी—दमन

भारतीय समाज व्यवस्था पुरूषप्रधान है। भारत वर्ष की राजनीतिक स्वतंत्रता के बाद सरकारने नारी को विवंचनामयी स्थिती से उबारने के प्रयास किए। किंतु रूढ प्रतिगामी इन प्रयासों को नाकाम बनाते है। बीसवीं सदी के अंतिम दशक तक आते—आते नारी अस्तित्व, अस्मिता, व्यक्तित्व संवदेना, स्वतंत्रता, समानता, न्याय आदि मानवीय अधिकारों की अनिवार्यता के बाद भी नारी दमन का चित्रण आज भी एक समस्या के रूप में सामने आता है।

पुरूषप्रधान समाजव्यवस्था में नारी को गौण स्थान रहा है। नारी स्वतंत्र रूप से अपने विचारों का तथा निर्णयक्षमता का प्रयोग कहीं कर पाती। कुछ मात्रा में अपवाद रूप में आज नारी स्वयं निर्णय ले रही है। विधवा, नौकरीपेशा, दलित पीड़ित नारी आदि के सामने आज अनेक समस्याएँ खड़ी है। उनमें से एक है नारी—दमन।

'चाक' उपन्यास की नायिका सारंग की बहन रेशम पति करमवीर के मरने पर विधवा हो जाती है। लेकिन पचीस साल की आयु में वह अपनी यौन—इच्छाओं को काबू नहीं कर पाती और पॉच महीने में गर्भवती हो जाती है। इस बात का पता सास को होने पर वह उसे गालियॉ देकर मारती है। उसका इच्छाओं को न जानकर उसे देवर डोरिया की बॉह थामने को कहती है। यहॉ नारी—दमन का रूप हमारे सामने आता है। रेशम के ससूरालवाले उसकी हत्या करते है,

---

१. कमला भसीन — अनु—वीणा शिवपुरी—पितृसत्ताक क्या है? पृष्ठ४८१

तो सारंग रेशम को न्याय दिलाना चाहती है। सांरग अपने पति रंजीत की सहायता से कोर्ट में अपील करती है। रंजीत कुछ दिनों तक उसका साथ देता है। जब रंजीत के बेटे चंदन को मारने की धमकी डोरिया के आदमी देते है, तब रंजीत अपनी बेटे के खातिर सारंग का साथ छोड़ देता है। यहीं पर सारंग को अपनी भावनाओं को दबाकर चूप रहना पड़ा था।

'चाक' का दूसरा पात्र चंदना है। जो सकल नामक सखा को चाहती थी लेकिन कुँवरजी के साथ विवाह होने पर भी वह सकल से प्यार करती थी। यह बात जब कुँवरजी को पता चली, तो उसके मायके उसे लाने गए और आते वक्त—बीच जंगल में उसपर वार किए और उसकी हत्या कर दी। चंदना की जीवनलीला वहीं समाप्त हुई। उसकी मॉ समझती है बेटी ससूराल में सुख से ... सास समझती है बहु मायके में सुख से ..... मगर दोनो बुढी अनंत इंतजार में क्षीण होती है। यहॉ चंदना के प्यार के रूप में नारी—दमन का चित्रण दिखाई देता है।

'चाक' की गुलकंदी जो बिसनुदेवा से प्यार करती थी। उसका चचेरा भाई हरपरसाद गुलकंदी ओर उसकी मॉ हरिप्यारी को जलाकर मार डालता है।

इस तरह नारी पर हो रहे अत्याचारों और शोषण के रूप में 'चाक' में नारी—दम का रूप हमारे सामने आता है।

'अगनपाखी' की भुवन अपने मॉ के खातिर मनोरूग्ण विजयसिंह से शादी करनी है। वह अपने बहन के बेटे चन्दर से प्यार करती थी। पर सामाजिक नियमों के तहत वह अपनी प्यार की कुर्बानी देती है। लेकिन उसके ससूरालवाले उसपर अत्याचार करते है। मनोरूग्ण पति

की वह दिन–रात सेवा सेवा करती है। लेकिन पति से प्राप्त सुख से वह वंचित रहती है। अपनी यौन–इच्छाओं को दबाकर अपना कर्तव्य निभाती है। उसकी सास उसे जोगिन बनाती है। और भुवन को बच्चा हो जाए इसलिए यज्ञ करवाती है। यह बातें जब भुवन की बहन 'मन्नू' को पता चलता है तब वह कहती है, "हरजाई रॉड, नास हो इसका, सत्यानास, घारकरी ने अपना खसम तो खदेड दिया अब भुवन को सती का पाठ पढ़ा रही है। गले में जोगिन की कंठी डाल दी और कह रही है कि धियपूत जन। औलाद क्या पोथी–पत्तरा से में से निकलती है।"[१] इस तरह भुवन की सास उसका मानसिक शोषण करते हुए उसका दमन करती है।

भुवन की सास उसके विधवा होने पर उसे सती जाने के लिए कहती है। लेकिन भुवन अंतिम इच्छा के रूप में देवी के दर्शन करने जाती है और उन लोगों की चंगुल से भाग जाती है। इसतरह भुवन पुरूषसत्ताक परिवार की भ्रष्ट व्यवस्था के दमन का चक्र तोड़ने की कोशिश करती है। पितृसत्ताक परिवार की भ्रष्ट व्यवस्था ने 'चाक' उपन्यास की रेशम को दमन के लिए, बाध्य बनाया। इसतरह विवेच्य उपन्यासों में नारी–दमन का चित्रण परिलक्षित होता है।

❖ नारी का अस्वस्थ दांपत्य जीवन –

समाजव्यवस्था की लघुतम ईकाई परिवार संस्था है। परिवार का आधार दांपत्य संबंध होता है। इस बारे में डॉ. मोहिनी शर्मा का कहना है, "पारिवारिक संबंधो में सर्वाधिक महत्वपूर्ण संबंध पति–पत्नि का होता है।"[२] परिवार का सुख बनाने के लिए दोनों के

---

१. मैत्रेयी पुष्पा – अगनपाखी – पृष्ठ क्र. ८८

१. डॉ. मोहिनी शर्मा – हिंदी उपन्यास और जीवनमूल्य पृष्ठ क्र.११३

संबंध अच्छे होने चाहिए। संयम, निष्ठा, समझदारी, परस्पर आदर तथा स्नेह दानों में होना चाहिए। पती–पत्नी की शारिरिक तथा मानसिक संतुष्टि स्वस्थ दांपत्य जीवन के लिए आवश्यक होती है।

अंतिम दशक में आधुनिकता के कारण विचारों में परिवर्तन हो रहा है। जिसके कारण अस्वस्थ दांपत्य जीवन की समस्या निर्माण हो रही है।

स्त्री की आत्मनिर्भरता, स्त्री–पुरूष समानता तथा पश्चिमी प्रभाव के कारण पति–पत्नी संबंधो को प्रभावित किया है। दांपत्य जीवन में अलगाव, टूटन, घूटन के निर्माण के कारण अस्वस्थ दांपत्य जीवन की समस्या निर्माण हुई है।

स्वस्थ दांपत्य जीवन में अनेक कारणों से समस्या निर्माण होती है। पति या पत्नी में अहंभाव, एक–दूसरे के विचारों में असमानता समझदारी की कमी, अर्थ की संपन्नता तथा अर्थाभाव पर पुरूष तथा स्त्री गमन की प्रवृत्ती संशय की प्रवृत्ति, पति की व्यसनाधिनता आदि कई कारणों से दांपत्य जीवन अस्वस्थ बन जाता है।

'चाक' की सारंग भी अपने दांपत्य जीवन में पति की एकाधिकार वादिता से निरंतर अवहेलित रही। सारंग अपनी बहन रेशम की हत्या का बदला लेते समय पति रंजीत का साथ पाना चाहती है। पूर्वार्ध में रंजीत सारंग का साथ देता है। लेकिन जब बेटे चंदन के जीवन को खतरा होता है तब वह सारंग का साथ छोड़ देता है। दोनों में अनबन होती है।

गॉव के स्कूल में आए श्रीधर मास्टर और सारंग के करीब आने से रंजीत को उसपे शक होता है। दोनों में तणाव आ जाता है। रंजीत शराब पीने लगता है। इस तरह सारंग का उत्तरार्ध कालीन

दांपत्य जीवन पति रंजीत की अपचारिता, शराबखोरीता, कुसंगता के कारण तनाव से अपुरीत रहा। पति की हरकतों पर सारंग का पत्नीरूप चीत्कार उठता है, "भटको मत रंजीत, मै खत्म हो जाऊंगी। ऊँचाइयॉ न सही, जमीन तो है।"[१]

'चाक' की दलवीर की विलासिता एवं दुश्चरित्रता के कारण उसकी पत्नी का दांपत्य जीवन अस्वस्थता से भरा हुआ दिखायी देता है।

'चाक' की कलावती चाची का दांपत्य जीवन पति की निड़रता के कारण विखंडित रहा। कलावती चाची की गोद में रिस्तल और पेट में सत्तो को छोड़कर वह लाला के कर्ज के मारे भाग गया था। तब कलावती चाची कहती है,"भड़ुआ डरपोक निकला, लाला के कर्ज के मारे भाग गया। अब देख लो कि पाई—पाई पटा दी न मैंने हम्बैतो!"[२]

इससे यह दिखाई देता हैं कि नारी के अस्तित्व, अस्मिता एवं व्यक्तित्व की स्वतंत्रता से इन्कार के कारण उसका दांपत्यजीवन अस्वस्थाओं से भरा हुआ नजर आता है। इस संदर्भ में महादेव वर्मा कहती है,"स्त्री स्वतंत्र व्यक्तित्व से रहित पति की छायामात्र बनकर रह गई है।"[३]

बेमेल विवाह के कारण नारी के दांपत्य जीवन में अस्वस्थता का रूप दिखाई देता है। तथा तनाव और विघटन की अवस्था का निर्माण भी होता है।

'चाक' में अंकित बनिया की बहू का दांपत्य जीवन अपने पति

१.मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ क्र. ३०९

२.मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ क्र. ८६

३.महादेवी वर्मा — शृंखला की कडियॉ, पृष्ठ १३

की नपुंसकता के कारण अस्वस्थ रहा। पुत्र—मोह में अंधे बने उसके सास—ससूर उसे ही वंध्या करार देते हुए, अपने बेटे की दूसरी शादी कर देना चाहते है।

'चाक' के मनोहर की बहू का दांपत्यजीवन भी अपने पति की नपुंसकता के कारण पीड़ित रहा।

'चाक' के सारंग का पति रंजीत जब पथभ्रष्ट होकर इससे मुकर जाता है, तो सारंग का दांपत्यजीवन तनाव से भर उठता है। तब सारंग सोचती है,"मेरी बुद्धि पर भरोसा नही तो रंजीत ही क्यों नहीं बताते कि मैं किसके लिए लड़ना चाह रही हूँ? अपनी बहन के लिए? चंदन के लिए? या अपने और रंजीत के लिए? क्या इस जंग में हम बराबर शरीक नही?"[१]

सारंग अपने दांपत्य जीवन में मानवोचित अस्तित्व, अस्मिता एवं व्यक्तित्व के स्वतंत्रता के रक्षार्थ संघर्षरत रही। सारंग की दांपत्यजीवन के संदर्भ में महादेवी वर्मा का कहना है कि, "प्रत्येक भारतीय पुरूष चाहे जितना सुशिक्षित हो, अपने पुराने संस्कारों से इतना दूर नहीं हो सका है कि अपनी पत्नी को अपनी प्रदर्शनी न समझे। उसकी विद्या, बुद्धि उसका कला—कौशल ओर सौंदर्य सब उसकी आत्मश्लाघा के साधन भाग है। जब कभी वह सजीव प्रदर्शन की प्रतिमा अपना भिन्न व्यक्तित्व व्यक्त करना चाहती है अपनी भिन्न रूचि या विचार प्रकट करती है, तो वह पहले क्षुब्ध, फिर असंतुष्ट हुए बिना नहीं रहता।"[२]

दांपत्यजीवन में पति की हित को अपने खाते में और अहित को पत्नी के खाते में डाल देने की प्रवृत्ती आम रही है।

---

१. .मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ क्र. ८८

२. महादेवी वर्मा — शृंखला की कडियॉ, पृष्ठ ८९

रंजीत अपनी पथभ्रष्टता के कारण पश्चाताप से युक्त है फिर भी इस परिस्थिती को सारंग को उत्तरदायी करार देते हुए कहता है, "आज तो सारंग मेरी हालत तुम्हारी बहन के कारण और भयावह हो गई।"[१]

इसतरह पति की दुश्चरित्रा एवं विड़ारता से नारी के दांपत्यजीवन में व्याप्त अस्वस्थता का 'चाक' में यथार्थ अंकन हुआ है।

'अगनपाखी' के बरजोरसिंह बेटे चंदन की करतूत को पत्नी मन्नू के माथे डालकर कहते है,"यह नहीं कहती कि हरामी क्या कांड करके आया है? ऐसी ही लुच्ची तुम्हारी बहन।"[२] इसीतरह सूखती फसल के मध्ये नजर कटनाइयों का इंतजार न कर पाने की विवशता में भी बरजोरसिंह अपना गुस्सा पत्नी मन्नू पर निकलते है। इसबारे में नानी चंदर से कहती है,"आदमीयों में यह आदत बड़ी बुरी होती है कि अच्छा हो तो वे करे, कुछ कमी वेसी हो जाए तो जनी के माथे मढ़ दे।"[३]

इसतरह नारी की दुहेरी दांसता उसके दांपत्यजीवन को अस्वस्थता से भर देती है।

'अगनपाखी' की भुवन का विवाह मनोरूग्ण विजयसिंह से हुआ। उसका दांपत्य जीवन पति की नपुसंकता तथा अधगलेपन के कारण अस्वस्थ रहा।

इसतरह पुरूष की एकाधिकार वादिता के कारण नारी के दांपत्य जीवन में उत्पन्न तनाव, बिखराब विघटन की स्थितियों को तथा

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ क्र. ५४
२. मैत्रेयी पुष्पा — अगनपाखी — पृष्ठ क्र. ५५
३.मैत्रेयी पुष्पा — अगनपाखी — पृष्ठ क्र. ४६

अस्वस्थ दांपत्य जीवन का यथार्थ चित्रण दिखाई देता है।

५.१० नारी की अस्मिता :—

नारी के अस्तित्व से ही नारी अस्मिता को अर्थ प्राप्त होता है। नारी अस्मिता अर्थात नारी का अस्तित्व या उसके होने का एहसास है। नारी ने अपने गरिमा को नारी अस्मिता के जरिए बनाए रखा है।

जयशंकर, प्रसादजीने नारी के अस्तित्व के बारे में 'कामायनी' काव्यसंग्रह ये पंक्तियों कही है,

"सिर नीचा कर किसकी सत्ता सब करते स्वीकार यहाँ?
सदा मौन हो प्रवचन करते जिसका, वह अस्तित्व कहा?"[१]

नारी अस्मिता अर्थ/परिभाषा :—

किसी भी व्यक्ति के अर्थात स्त्री या पुरूष के अस्तित्व को अस्मिता माना जाता है। किसी के भी 'मै हूँ' के रूप में अपनी सत्ता का अनुभव ही अस्मिता है। प्रत्येक व्यक्ति के अस्तित्व के बीना उसकी अस्मिता का कोई अर्थ नहीं होता।'

अस्मिता का अर्थ :—

भोलानाथ तिवारीजीने 'हिंदी उच्चारण कोश' में अस्मिता का उच्चारण इसतरह किया है।

"अस्मिता — आस्—मि—ता
as- mi- ta
अस्मिता।"[२]

'राजपाल हिंदी शब्दकोश' में

---

१. जयशंकर प्रसाद — कामायनी — पृष्ठ क्र. १५
२. भोलानाथ तिवारी — हिंदी उच्चारण कोश — पृष्ठ क्र. ७३१

"अस्मिता —

१) अहंभाव, अपनी सत्ता का भाव, आपा।

२) अहंकार, अभिमान।"[१]

आधुनिक हिंदी शब्दकोश —

"अस्मिता —

१) अपने अस्तित्व या होने का एहसास।

२) असंभव, अस्मि।

३) 'मैं हूँ' रूप में अपनी सत्ता का अनुभव।"[२]

उपर्युक्त कोशों के अर्थ से अस्मिता के विभिन्न अर्थ हमारे सामने आते है।

अस्मिता की परिभाषा —

"अहंकार, आत्मश्लाघा, मोह अस्मिता है।"[३]

आज भी नारी विविध सामाजिक बंधनो कुप्रथाओं मे जकड़ी हुई है। नारी के स्वभाव में कुंठा, शोषण, पुरूष का अधिपत्य स्वीकारने की वृत्ति आदि का उदय हो गया है। प्राचीन विचारों के प्रभाव स्वरूप नारी पुरूष का अधिपत्य स्वीकारती है। कभी — कभी नारी ही नारी अस्मिता को अभिशाप समझती है।

'चाक' की रेशम विधवा होने पर भी जब पेट से होती है, यह बात उसके सास को अच्छी नहीं लगती। वह रेशम पर अत्याचार करती है। इससे नारी अस्मिता को ठेंस पहूँचती है। अब रेशम की सास उसे कहती है कि इस आग में तूम स्वाहा हो जाओगी। इससे रेशम की अस्मिता जागृत होती है। वह कहती है,"हो जाने दो

---

१. गोविंद चातक — आधुनिक हिंदी शब्दकोश — पृष्ठ क्र. १७७डॉ.
२.हरदेव बाहरी — राजपाल हिंदी शब्दकोश — पृष्ठ क्र. ७१डॉ. २.
३.श्री नवलजी — नालंदा विशाल शब्दसागर — पृष्ठ क्र. १११

स्वाहा। मै तो भसम होने को ही बैठी हूँ पर मेरा बालक जी जाएगा। मैं जो पुन्न कर रही हूँ अम्मॉ, उसे पाप न कहो। बिना बाप के बालक को भगवान पाप मानता तो कुमारी—विधवा की कोख सुखा डालता"[१]

इस तरह एक नारी की अस्मिता जागृत होती हुई दिखाई देती है।

रेशम जब डोरिया की पहलवानी और खूँखारता के बारे में सारंग को बताया तब सारंग अपना हाथ से छूडाकर शेरनी सी दहाड़ती है कि,"डोरिया जैसे देखे हैं तीन सौ साठ। ऊँगली छूकर तो देखे, भडुआ को कच्चा चबा जाऊँगी।"[२]

आधुनिक विचारों से प्रभावित नारी अस्मिता का चित्रण भी 'चाक' में हुआ है। सारंग आधुनिक विचारों से प्रभावित नारी है। सारंग गॉव के प्रधान पद के लिए अपना पर्चा भरती है। यहॉ उसके अस्मितों के दर्शन होते है। वह संघर्ष, अत्याचार और शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए तत्पर रहती है।

'अगनपाखी' की भुवन परंपरागत मान्यताओं का विरोध करती है। भुवन में नारी अस्मिता के सेवाभावी, समर्पिता स्वाभिमानी और साहसी आदि रूप दिखायी देते है। भुवन मनोरूग्ण पति विजयसिंह के मृत्यु के बाद भी अपना अस्तित्व बनाना चाहती है। उसके ससूरालवाले उसे पति के साथ सति जाने को कहते है। लेकिन आखिरी ख्वाईश के रूप वहॉ से अपने बहन के बेटे के साथ भाग जाती है। और अपनी अलग अस्मिता बनाती है।

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ क्र. १९
२. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ क्र. २२

इसतरह विवेच्य उपन्यासों में नारी—अस्मिता का जागृत रूप दिखायी देता है।

५.११ नारी—चेतना

प्राचीन काल में नारी अपने सामाजिक अधिकारों के प्रति अनभिज्ञ थी। परंतु १९ वीं शती में विविध समाज सेवी संस्था समाजसेवकों के कारण स्त्री—मुक्ति आंदोलन का प्रभाव भारत में हुआ। नारी शिक्षा के कारण वह अपने अधिकार और कर्तव्य बोध से सचेत हो गई। नारी—चेतना के कारण उसने पुरूष की पराधीनता और दासता को ठुकरा दिया। अपने स्वतंत्र अस्तित्व एवं अस्मिता के बोध से पति के जीवन में स्वयं को मिटाकर उसे अधिकाधिक सुखी, संतुष्ट रखने की नारी की प्रवृत्ति में अंतर आया। और विचारों को व्यक्त करने का साहस उसमें आ गया। और वह संघर्ष के लिए तैयार हो गयी।

'चाक' की रेशम विधवा होने पर गर्भवति बन जाती है। उसके ससूरालवाले उसपर बहुत अत्याचार करते है। वह अपने सास से कहती है, "पेड़ हरा—भरा रहे तो फूल—फल क्यों नहीं लगेंगे? ऐसा हो सकता है कि ऋतु आए और बल्लरी फूले नहीं? औरत ऋतुमती हो और आग दहे नहीं?"[१] इस तरह यहॉ नारी—चेतना का रूप दिखायी देता है।

नारी—चेतना के कारण ही नारी प्राचीन परंपराओं को स्विकार नहीं करती। रेशम की छानबीन जब उसकी सास करती है तब रेशम सास से कहती है, "मइयो! तुम मेरे पीछे क्यों पड गई हो! मेरे चालचलन की झंडी फहराना जरूरी है? बिरया ही छानबीन करने में

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ क्र. १८

गी हो। आज को तुम्हारा बेटा मेरी जगह होता तो पूछती कि तू किसके संग सोया था?

मेरे मरे पीछे तेरहीं तक का भी सबर न करता और ले आता दूसरी"[१]

इसतरह रेशम में नारी चेतना का रूप दिखाई देता है। रेशम स्त्री के लिए भी पुरूषों जैसी आजादी चाहती है। सारंग चेतना प्राप्त नारी है। वह पढ़ी–लिखी संघर्षशीला नारी है, जो शोषण और अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए तत्पर है। वह पुराने विचारों के प्रति आवाज उठाती है।

'अगनपाखी' की भुवन भी अपने बहन के बेटे चंदन की ओर आकर्षित होती है। उससे प्यार करती है। यह बात समाज व्यवस्था के खिलाफ है। कुछ मर्यादा और पारिवारिक कर्तव्यों के बीच वह मॉ के कहने पर पागल कुँवरजी से विवाह करती है। वह पत्नीधर्म निभाती है। लेकिन उसमें प्रेरित नारी–चेतना के कारण वह सती जाने के लिए तैयार नहीं होती और मंदिर के गुप्त द्वार से भाग जाती है। और चंदर के साथ रहने लगती है। वह अपने देवर थानसिंह के खिलाफ कचहरी में केस दायर करती है। अपने पति के जायदा में हिस्सा मॉगती है। उसमें उत्पन्न नारी–चेतना के दर्शन यहॉ होते है।

भुवन की बहन मन्नू भी नारी–चेतना का उदाहरण है।

नारी में अच्छा–बूरा समझने की और निर्णय लेने की चेतना आ चुकी है, अब वह गलत का सामना कर स्वयं निर्णयक्षम बन चुकी है। उसमें अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहने की भावना आ चुकी है।

---

१. मैत्रेयी पुष्पा – चाक – पृष्ठ क्र. १९

५.१२ नारी की आत्मनिर्भरता

१९ वी शती में नारी–मुक्ति के साथ नारी–शिक्षा का प्रसार बढा। उसने घर की चार दीवारों से बाहर आकर स्वतंत्र रूप से काम करना आरंभ किया। स्वंय के लिए व्यापक कार्यक्षेत्र निर्माण किया। उसने पहचान लिया कि स्वावलंबन के लिए अर्थप्राप्ती महत्वपूर्ण है। आत्मनिर्भरता के विभिन्न साधन नारी ने खोज लिए। उसे कानूनी आरक्षण से भी विविध नौकरी में स्थन मिला। साथ ही विविध सेवाभावी संस्थाएँ भी सामने आयी जो स्त्री–मुक्ति का कार्य कर उसे स्वावलंबी बनाना चाहती है।

'चाक' उपन्यासो की सारंग भी शिक्षित है। वह बचपन में गुरूकुल में पढ़ रही थी। सारंग मात्र पत्नी बनकर जीना नहीं चाहती, तो वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व तलाशती है। वह अपने पति के निर्णय को विरोध करती है। वह श्रीधर मास्टर और ससूर गजाधरसिंह के सहारे गॉव के पंचायती चुनाव में खड़ी रहती है। रंजीत उसे विरोध करता है फिर भी वह अपना पर्चा वापस नहीं लेती। वह अपनी अलग पहचान बनाने की कोशिश करती है।

'अगनपाखी' में भुवन की मॉ गेंदारानी भी आत्मनिर्भर दिखाई देती है। पति के मृत्यु के पश्चात वह अकेली बनती है। तब उसके गोंद में भुवन थी। उसकी मॉ खेतो में काम करके अपने और बच्ची का पेट पालती है। खेतों में मजूरी करती है। लिए जाती है। किसी के सामने झुकती नहीं। यहॉ उसका आत्मनिर्भर रूप दिखाई देता है। 'अगनपाखी' की भुवन भी पागल पति से विवाहीत होने पर पहले इस बात को जानने पर की पति पागल है वह ससूराल जाने से इन्कार करती है और आत्मनिर्भरता से अपना जीवन जीना चाहती थी लेकिन

मॉ के समझाने पर वह ससूराल जाती है। पति की सेवा करती है। लेकिन उसके पति की तबीयत बिघड़ जाती है। और उसके मृत्यु के बाद भुवन के ससूरालवाले उसे सति जाने के लिए विवश करते है। लेकिन आखरि ख्वाईश के रूप में वह मंदिर जाकर वहॉ से भाग जाती है। वह आत्मनिर्भरता से अपने बहन के बेटेचंदर के साथ रहना चाहती है। वह कचहरी में केस दायर करती है वह अपने मृत पति के संपत्ति की हकदार है। यहॉ उसकी आत्मनिर्भरता दिखाई देती है।

नारी की पारंपारिक बंधनो से मुक्ति और उसकी अस्मिता की खोज तभी पूर्ण हो सकती है जब वह आत्मनिर्भर बने। आत्मनिर्भरता के आधार पर ही वह अधिकार प्राप्त कर सकती है।

❖ **निष्कर्ष :—**

विवेच्य उपन्यासों में मैत्रेयीजीने ग्रामीण नारी की समस्याओं, विद्रोह, संघर्ष को नारी विमर्श के अंतर्गत व्यक्त किया है। साथ ही नारी की क्षमताओं उसका अस्तित्व याने अस्मिता, उसकी चेतना भी हमारे सामने उजागर की है। विवेच्य उपन्यासों में मैत्रेयीजी ने रेशम के माध्यम नारी का वैधव्य जीवन किस तरह होता है उसका शोषण किस प्रकार होता हैं। तथा रेशम की हत्या के साथ ही भ्रूणहत्या का चित्रण परिलक्षित होता है। 'अगनपाखी' की भुवन के द्वारा नारी के प्रति व्यभिचार दिखाई देता है। साथ नारी—चेतना और नारी की आत्मनिर्भरता भी उसके द्वारा हमारे सामने आती है।

भुवन के द्वारा अनमेल विवाह की समस्या हमारे सामने आती है। अगनपाखी की भुवन और चाक की सारंग भी अस्वस्थ दांपत्य जीवनयापन करती है। फिर भी दोनो में एक नारी में उत्पन्न

आत्मनिर्भरता दिखायी देती है। विवेच्य उपन्यासों में मैत्रेयीजीने रेशम, सारंग और भुवन के माध्यम से पारिवारिक शोषण को चित्रित किया है। उनके प्रति सामाजिक हिंसा कारूप भी हमारे सामने परिलक्षित किया है। मैत्रेयीजीने 'चाक' की नायिक सारंग को साहसी, विवेकशील अधिकारों के प्रति जाकरूक, संवेदनशील, संगठनक्षम तथा उदात्त मनोभावोंसे युक्त, आत्मनिर्भर पात्र के रूप में हमारे सामने रखा है।

नारी–विमर्श के अंतर्गत मेत्रेयीजीने चाक की रेशम, गुलकंदी, चंदना, शकुंतला, पंचन्नाबीबी, हरिप्यारी की पीड़ा शोषण, उनकें संघर्ष और विद्रोह का भी स्वाभाविक चित्रण किया है। मैत्रेयीजीने ग्रामीण नारी की मनोवैज्ञानिक पहलुओं का, रूदन–विरहित गतिशील नारी–पात्रो का यथार्थ चित्रण अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। अन्याय का प्रतिकार करनेवाली नारी, नारी–दमन आदि रूप नारी–विमर्श के अंतर्गत परिलक्षित किए है। मैत्रेयीजीने नारी–विमर्श के अंतर्गत नारी के पूरे व्यक्तित्व को हमारे सामने रखा है। नारीवाद के एक अंग के रूप में 'नारी–विमर्श' यह एक प्रगतिवादी विचार है। विवेच्य उपन्यास परंपरागत नैतिक विचारधारा पर प्रश्नचिन्ह लगाकर सुधार की मॉग करता है। मैत्रेयीजी विवेच्य उपन्यासों के द्वारा 'नारी–विमर्श' को दिखाने में सफल हुई है।